खिलौना गुरु के नाम से मशहूर अरविंद ने बढ़ाया बरेली का मान, कबाड़ से खिलौना बना कर बच्चों को विज्ञान के प्रति करते हैं जागरूक

पद्मश्री पाने वाले बरेली के पहले नागरिक बनेंगे अरविंद गुप्ता

हिन्दुस्तान एक्सक्लूसिव

बरेली | आशीष दीक्षित

मार्च-अप्रैल में राष्ट्रपति 73 हस्तियों को पदमश्री पुरस्कार से सम्मानित करेंगे। उनमें एक नाम बरेली के अरविंद गुप्ता का भी है। इतिहास में पहली बार बरेली के किसी व्यक्ति को यह पुरस्कार मिलने जा रहा है। आईआईटी पास अरविंद कबाड़ से खिलौना बनाकर बच्चों को ज्ञान-विज्ञान के प्रति जागरुक करते हैं।

26 जनवरी को सरकार ने पद्म पुरस्कारों की घोषणा की थी। इसमें खिलौना गुरु अरविंद गुप्ता का नाम भी शामिल है। 64 वर्षीय अरविंद गुप्ता का जन्म बरेली के आलमगिरी गंज में हुआ था। उनके पिता अवध बिहारी लाल गुप्ता शॉप फैक्ट्री चलाते थे। पिता और मां रामदुलारी ने कभी भी स्कूल का चेहरा नहीं देखा था। मगर उनकी मां शिक्षा का महत्व भली भांति जानती थी। इसीलिए उन्होंने अपने चारों बच्चों का एडमिशन सेंट मारिया गोरेटी स्कूल में कराया था। सेंट मारिया से 11वीं तक की पढ़ाई करने के बाद अरविंद ने जीआइसी बरेली से इंटरमीडिएट किया। उसी वर्ष 1970 में उनका आईआईटी कानपुर में चयन हो गया। आईआईटी करने के बाद अरविंद ने टाटा मोटर्स में कैंपस सेलेक्शन के जरिए जॉब पाई।



अरविंद गुप्ता।

खिलौना गुरु के नाम से हुए मशहूर

अरविंद बताते हैं कि हमारा मकसद बच्चों को उनके पास मौजूद सामग्रियों से विज्ञान सिखाना है। गांव के छोटे-छोटे बाजारों से सामान खरीद कर उन्होंने खिलौने बनाए। इन खिलौनों की मदद से बच्चों को विज्ञान और गणित की ट्रिक समझाई। आज वह खिलौना गुरु के नाम से मशहूर हैं। पुणे यूनिवर्सिटी में उनके चिल्ड्रेन साइंस सेंटर की अलग ही पहचान है।

खेल-खेल में देना है ज्ञान

मात्र 24 वर्ष की उम्र से बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ाने में लगे अरविंद 3000 से ज्यादा स्कूलों में अपने प्रयोग दिखा चुके हैं। दूरदर्शन के ज्ञान चैनल का शुभारंभ भी उनके कार्यक्रम से ही हुआ था। दूरदर्शन पर उनका तरंग कार्यक्रम भी बेहद चर्चित रहा। अरविंद ने 8600 विज्ञान वीडियो यू ट्यूब पर अपलोड किए हैं। उनकी वेबसाइट arvindguptatoys. com पर ज्ञान विज्ञान से जुड़ी 5500 दुर्लभ किताबें अपलोड हैं।

1978 से शुरू किया अनोखा काम

पिछले एक वर्ष से चेन्नई में रह रहे अरविंद ने 'हिन्दुस्तान' से फोन पर बात की। उन्होंने बताया कि टाटा में काम करने के दौरान वो डॉ अनिल सदगोपान के संपर्क में आये। डॉ अनिल बच्चों में विज्ञान के प्रति जागरूकता बढ़ाने के के अभियान में जुटे हुए थे। वह होशंगाबाद विज्ञान कार्यक्रम का आयोजन करते थे। अरविंद भी इस अभियान में जुट गए। उन्होंने पुणे के पास 1978 में अपना काम शुरू किया।

बरेली में ही रहता है परिवार

अरविंद की पत्नी सुनीता फर्ग्युसन कॉलेज पुणे में समाजशास्त्र की प्रोफेसर रहीं। वो पिछले वर्ष ही सेवानिवृत हुई हैं। बरेली में उनके बड़े भाई डॉ अजीत गुप्ता का पिछले वर्ष निधन हो गया था। उनके छोटे भाई विजय गुप्ता सिविल लाइंस में रहते हैं। उनकी महालक्ष्मी केमिकल के नाम से परसाखेड़ा में फैक्ट्री है। अरविंद कहते हैं कि जल्द ही उत्तरप्रदेश और खास कर बरेली में भी वो अपने कार्यक्रम शुरू करने वाले हैं।